डॉ० किरण पटेल (हिन्दी-विभाग)
वैशाली महिला महाविद्यालय, हाजीपुर।
दिनांक - 25.07.2020

B.A.-III

ठाकुर का कुआं

'ठाकुर का कुआं' दलित समस्या को केन्द्र में रखकर लिखी गई कहानी है। हिन्दू वर्ण व्यवस्था में दलितों को अस्पृश्य माना गया है। चौथे पायदान पर खड़े इन शूद्रों की परछाई भी सवर्ण पर पड़ना अपराध है। उच्च वर्ग की सेवा करना इनका 'धर्म' माना गया है। इन्हें 'ताड़न के अधिकारी' बताया गया है। समाज के सभी त्याज्य और घृणित काम उन्हीं के जिम्मे है। मनुष्य का मल उठाने से लेकर मरे हुए जानवरों को उठाना और उनका चमड़ा उतारने तक का जिम्मा उन्हीं का है। सबसे दुःसाध्य काम इनके जिम्मे परन्तु सवर्ण

ज्यादा तिरस्कृत यही समाज। इन्हें गाँव से बाहर बसाया जाता है, और उन्हें स्वर्ण अपने स्थान स्वानों पीने में शामिल करने की बात तो दूर, खाना भी देना होता है तो पत्तल या उसके हाथ पर ऊपर से ही छोड़ देते हैं ताकि शूद्र का स्पर्श न हो जाए। वे गाँव के किसी कुएँ से पानी भी नहीं भर सकते। कोई कुआँ ठाकुर का होता है, तो कोई ब्राह्मण का और कोई साहू का। उन्हें तो गाँव की गढ़ही से, या दूर दराज के किसी कुएँ से पानी भरना पड़ता है। इसी विषय को केंद्र में रखकर प्रेमचन्द ने इस कहानी में हिन्दू वर्ण व्यवस्था को अपना निशाना बनाया है।

इस कहानी में 'हरिजनों' को गाँव के किसी भी कुएँ

पेज - ③

से पानी न लेने की मजबूरी और उससे उपजी पीड़ा और आक्रोश का चित्रण किया गया है।

हिन्दू समाज की यह खासियत है इसमें जाति के आधार पर व्यक्ति-व्यक्ति में भेद किया जाता है। व्यक्ति की पहचान जाति से होती है उसके काम से नहीं। जाति व्यवस्था हिन्दू समाज की सच्चाई है जिससे अलग हटकर कोई बात ही नहीं की जाती। इसे मिटाने या इसका अतिक्रमण करने की बात तो सब करते हैं पर यह हमारे रग-रग में इस तरह बसी है, हमारे रक्त में इस तरह प्रवाहित हो रही है कि उसे अपने व्यक्तित्व से अलग करना कठिन है। प्रेमचन्द की दलित जीवन को लेकर लिखी कहानियाँ हमें अपने अन्दर झांकने को और को बदलने की प्रेरणा देती हैं।

- क्रमशः